मोहम्मद मुमताज़ हसन

गया, बिहार

मौसम सुहाना देख कर तितलियाँ आने लगी हैं!
ख़ामोश सी शाख़ों पे नई उंगलियां आने लगी हैं!!

आँखें जो हँसते-हँसते भीगीं तो ये जाना हमने!
दिल के हर इक कोने से सिसकियाँ आने लगी हैं!!

पगडंडियाँ क्यों आज भी मायूस रहती हैं!
शहर से गाँव अब नई पीढ़ियाँ आने लगी हैं!!

आँगन की मिट्टी पूछती है हाल अपनेपन का!
परदेस से लौट कर घर कश्तियां आने लगी है !!

बरगद तले जो ख़्वाब थे मासूमियत भरे !
कंक्रीट के शहर में वो बस्तियां आने लगी है !!

अलका शर्मा

जम्मू

नेक दिल जो इनायतें पाता,
ख़ूब वो तो नियामतें पाता।

पाप कर जो यहाँ-वहाँ घूमे,
दो-जहां की हिक़ारतें पाता।

जो हक़ीक़ी समझ रखे वो तो-
हर तरफ़ ही रियायतें पाता।

साज़िशों के महल बनाए जो-
ज़िंदगी में हरारतें पाता।

आफ़तों में घिरे अकेला जो,
हौसलों की विरासतें पाता।